<u>Shame!</u>

The man was crossing the road,
Near the Netaji Nagar bus stand ,
With the support of his two hands, pulling along his body-
The man was crossing the road
Wearing a dark black shirt with numerous holes and a half pant,
Gangrene has eaten up his two foot;
Hasn't cut his hair beard since at least ten years:
My elder brother was with me,
Looking at him, he said, " it's better to die than be in so much pain,"
I don't support this statement,
But trust it's not possible to explain with words
The picture of his misery.
Whatever i write,
I can't even write 1 percent of his pain.
No person within 20 feet around him
Can move ahead a bit.
So much foul a smell and wounds are there in his body,
Even after accepting everything, there lies a question -
Is the man out of the society?
In front of everyone, in broad daylight,
Being like a rotten molten dead body
In a total treatmentless condition,
That helpless person , supporting on his hands
Was crossing the road without any expression-
Me too standing in a safe distance,
Was watching the man with immense attention, maybe
Was searching for another character for a poem
Can the job be done just by writing?
Only blaming the society?
Am I too out of the society?
Could I not have done anything for the man?
Maybe this is only called societal degradation
Shame!

ছিঃ

লোকটা রাস্তা পার হচ্ছিল—
নেতাজীনগর বাসস্ট্যান্ডের কাছাকাছি
দুই হাতে ভর দিয়ে শরীরটাকে ঘষটে ঘষটে
রাস্তা পার হচ্ছিল মানুষটা।
কালো কুচকুচে শতছিদ্র জামা আর হাফপ্যান্ট পরা,
পায়ের পাতা দুটো গ্যাংগ্রিনে একেবারে খেয়ে গেছে,
চুল দাড়ি অন্তত বছর দশেক কাটেনি।
আমার দাদা আমার সাথেই ছিলো,
ওকে দেখেই বলল "এত কষ্টের থেকে মরে যাওয়া ভালো,'
কথাটা আমি একটুও সমর্থন করছি না ঠিকই,
কিন্তু বিশ্বাস করুন কোনো লেখাতেই তুলে ধরা সম্ভব নয়
লোকটির দুর্দশার ছবি,
আমি যাই লিখিনা কেন
লোকটির কষ্টের এক শতাংশও লেখা যাবে না।
লোকটির আশেপাশে কুড়ি ফুটের মধ্যে
একটি মানুষও এগোতে পারছে না
এতটাই দুর্গন্ধ এবং ঘা সারা শরীরে,
সবকিছু মেনে নিয়েও একটি প্রশ্ন থেকে যায় —
লোকটি কি সমাজের বাইরে?
সবার চোখের সামনে প্রকাশ্য দিবালোকে
পচা গলা লাস হয়ে
সম্পূর্ণ চিকিৎসাহীন অবস্থায়
ওই অসহায় মানুষটি দুহাতে ভর দিয়ে
সম্পূর্ণ নির্বিকার চিত্তে রাস্তা পার হচ্ছিল,
আমিও নিরাপদ দুরত্বে দাঁড়িয়ে—
বাকি সবার মতো নিরাপদ দূরত্বে দাঁড়িয়ে
লোকটিকে মন দিয়ে দেখছিলাম, হয়তো
আর একটি চরিত্র খুঁজছিলাম কবিতা লেখার।
শুধু লিখেই কি দায় সারা যায়?
শুধুই দোষারোপ করা সমাজের ওপর?
আমিও কি সমাজের বাইরে?
আমি কি কিছুই করতে পারতাম না লোকটির জন্য?
একেই বুঝি বলে সামাজিক দৈন্য!
ছিঃ।

छिः

नेताजीनगर बसस्टैंड के पास,

वह आदमी सड़क पार कर रहा था,

हाथों के बल पर शरीर को घसीटते हुए,

सड़क पार कर रहा था वह आदमी,

काला कलूटा छेदों वाला शर्ट और हाफ पैंट पहना हुआ था,

गैंग्रीन ने पैरों को बिलकुल खाकर नष्ट कर दिया है।

लगभग दस साल तक लगता है जैसे,

बालों और दाढ़ियों को काटा नहीं है,

मेरे भैया साथ में थे,

देखकर बोले,"इतने कष्ट सहने से मर जाना ही बेहतर है।"

इस बात का समर्थन तो नहीं कर सकता,

पर यकीन मानिए,

किसी तरह भी,

उस आदमी की दुर्गति की तस्वीर प्रस्तुत करना,

मुमकिन नहीं है।

मैं चाहे जो भी लिखूं,

उस आदमी की पीड़ा के एक शतांश भी लिख नहीं सकता,

उस आदमी के शरीर से इतनी बू फ़ैल रही थी,

और सारा शरीर घावों से भरा हुआ था की,

उसके आसपास बीस फुट तक कोई आ नहीं सकता था।

सबकुछ मानकर भी एक सवाल बार बार उठता है,

वह आदमी क्या समाज से बाहर है ?

सबकी आँखों के समक्ष,

बिना किसी इलाज के,

वह असहाय आदमी दोनों हाथों के बल चल रहा था,

निर्लिप्त होकर सड़क पार कर रहा था,

मैं भी सुरक्षा के लिए थोड़ी दूरी बनाए,

बाकि सभी लोगों की तरह,

उस आदमी को देख रहा था,

शायद कविता लिखने के लिए कोई पात्र ढूंढ रहा था।

सिर्फ लिखकर ही क्या जिम्मेदारियां ख़त्म हो जाती है

सिर्फ समाज के ऊपर इल्जाम लगाना ही क्या पर्याप्त है

मैं क्या समाज से बाहर हूँ ?

मैं क्या कुछ भी नहीं कर सकता था उस आदमी के लिए

इसी को क्या कहते हैं सामाजिक दीनता

छिः।